

@astrodisha.com

श्रावण मास का महात्म्य

चौदहवाँ अध्याय

पंडित सुनील वत्स

<https://astrodisha.com>

Whatsapp No: 7838813444

Facebook: <https://www.facebook.com/AstroDishaPtSunilVats>

YouTube Channel : <https://www.youtube.com/c/astrodisha>

Chapter 14

चौदहवाँ अध्याय

नाग पंचमी व्रत का माहात्म्य

ईश्वर बोले - हे महामुने ! श्रावण मास (Shravan Maas) में जो व्रत करने योग्य है वो अब मैं बताऊँगा, आप उसे ध्यान से सुनिए। चतुर्थी तिथि को एक बार भोजन करें और पंचमी को नक्त भोजन करें। स्वर्ण, चाँदी, काष्ठ अथवा मिट्टी का पाँच फणों वाला सुन्दर नाग बनाकर पंचमी के दिन उस नाग की भक्तिपूर्वक पूजा करनी चाहिए। द्वार के दोनों ओर गोबर से बड़े-बड़े नाग बनाए और दधि, शुभ दुर्वाकुरों, कनेर-मालती-चमेली-चम्पा के फूलों, गंधों, अक्षतों, धूपों तथा मनोहर दीपों से उनकी विधिवत पूजा करें। उसके बाद ब्राह्मणों को घृत, मोदक तथा खीर का भोजन कराएं। इसके बाद अनंत, वासुकि, शेष, पद्मनाभ, कम्बल, कर्कोटक, अश्व, आठवाँ धृतराष्ट्र, शंखपाल, कालीय तथा तक्षक - इन सब नागकुल के अधिपतियों को तथा इनकी माता कद्रू को भी हल्दी और चन्दन से दीवार पर लिखकर फूलों आदि से इनकी पूजा करें।

उसके बाद बुद्धिमान को चाहिए कि वामी में प्रत्यक्ष नागों का पूजन करें और उन्हें दूध पिलाएं। घृत तथा शर्करा मिश्रित पर्याप्त दुग्ध उन्हें अर्पित करें। उस दिन व्यक्ति लोहे के पात्र में पूड़ी आदि ना बनाए। नैवेद्य के लिए गोधूम का पायस भक्तिपूर्वक अर्पण करें। भुने हुए चने, धान का लावा तथा जौ सर्पों को अर्पित करना चाहिए और स्वयं भी उन्हें ग्रहण करना चाहिए, बच्चों को भी

यही खिलाना चाहिए इससे उनके दाँत मजबूत होते हैं। सांप की बाम्बी के पास श्रृंगारयुक्त स्त्रियों को गायन तथा वादन करना चाहिए और इस दिन को उत्सव की तरह मनाना चाहिए. इस विधि से व्रत करने पर सर्प से कभी भी भय नहीं होता है। हे विप्र ! मैं लोकों के हित की कामना से आपसे कुछ और भी कहूँगा, हे महामुने ! आप उसे सुनिए। हे वत्स ! नाग के द्वारा डसा गया मनुष्य मरने के बाद अधोगति को प्राप्त होता है और अधोगति में पहुंचकर वह तामसी सर्प होता है। इसकी निवृत्ति के लिए पूर्वोक्त विधि से एकभुक्त आदि समस्त कृत्य करें और ब्राह्मणों से नाग निर्माण तथा पूजा आदि आदरपूर्वक कराएं।

इस प्रकार बारह मासों में प्रत्येक मास में शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को इस व्रत का अनुष्ठान करें और वर्ष के पूरा होने पर नागों के निमित्त ब्राह्मणों तथा सन्यासियों को भोजन कराएं। किसी पुराणज्ञाता ब्राह्मण को रत्नजटित सुवर्णमय नाग और सभी उपस्करों से युक्त तथा बछड़े सहित गौ प्रदान करें। दान के समय सर्वव्यापी, सर्वगामी, सब कुछ प्रदान करने वाले, अनंतनारायण का स्मरण करते हुए यह कहना चाहिए - हे गोविन्द ! मेरे कुल में अगर कोई व्यक्ति सर्प दंश से अधोगति को प्राप्त हुए हैं वे मेरे द्वारा किए गए व्रत तथा दान से मुक्त हो जाएं - ऐसा उच्चारण करके अक्षतयुक्त तथा श्वेतचन्दन मिश्रित जल वासुदेव के समक्ष भक्तिपूर्वक जल में छोड़ दें।

हे मुनिसत्तम ! इस विधि से व्रत के करने पर उसके कुल में जो सभी लोग सर्प के काटने से भविष्य में मृत्यु को प्राप्त होंगे या पूर्व में मर चुके हैं वे सब स्वर्गगति प्राप्त करेंगे। साथ ही हे कुलनन्दन ! इस विधि से व्रत करने वाला अपने सभी वंशजों का उद्धार करके अप्सराओं के द्वारा सेवित होता हुआ शिव-

सान्निध्य प्राप्त करता है। जो मनुष्य वित्तशाठ्य से रहित होता है, वही इस व्रत का संपूर्ण फल प्राप्त करता है।

जो लोग शुक्ल पक्ष की सभी पंचमी तिथियों में नक्तव्रत करके भक्ति संपन्न होकर पुष्प आदि उपहारों से सौभाग्यशाली नागों का पूजन करते हैं, उनके घरों में मणियों की किरणों से विभूषित अंगोंवाले सर्प उन्हें अभय देने वाले होते हैं और उनके ऊपर प्रसन्न रहते हैं। जो ब्राह्मण गृहदान का प्रतिग्रह करते हैं, वे भी घोर यातना भोगकर अंत में सर्पयोनि को प्राप्त होते हैं।

हे मुनिसत्तम ! जो कोई भी मनुष्य नागहत्या के कारण इस लोक में मृत संतानों वाले अथवा पुत्रहीन होते हैं और जो कोई मनुष्य स्त्रियों के प्रति कार्पण्य के कारण सर्प योनि में जाते हैं, कुछ लोग धरोहर रखकर उसे स्वयं ग्रहण कर लेते हैं अथवा मिथ्या भाषण के कारण सर्प होते हैं अथवा अन्य कारणों से भी जो मनुष्य सर्पयोनि में जाते हैं उन सभी के प्रायश्चित के लिए यह उत्तम उपाय कहा गया है।

यदि कोई मनुष्य वित्तशाठ्य से रहित होकर नाग पंचमी का व्रत करता है तो उसके कल्याण के लिए सभी नागों के अधिपति शेषनाग तथा वासुकि हाथ जोड़कर प्रभु श्रीहरि से तथा सदाशिव (Lord Shiv) से प्रार्थना करते हैं तब शेष और वासुकि की प्रार्थना से प्रसन्न हुए परमेश्वर शिव (Lord Shiv) तथा विष्णु उस व्यक्ति के सभी मनोरथ पूर्ण कर देते हैं। वह नागलोक में अनेक प्रकार के विपुल सुखों का उपभोग करके बाद में उत्तम वैकुण्ठ अथवा कैलाश में

जाकर शिव (Lord Shiv) तथा विष्णु का गण बनकर परम सुख प्राप्त करता है। हे वत्स ! मैंने आपसे नागों के इस पंचमी व्रत का वर्णन कर दिया, इसके बाद अब आप अन्य कौन-सा व्रत सुनना चाहते हैं, उसे बताइए।

॥ इस प्रकार श्रीस्कन्द पुराण के अंतर्गत ईश्वर सनत्कुमार संवाद में श्रावण मास (Shravan Maas) माहात्म्य में “नागपंचमी व्रत कथन” नामक चौदहवाँ अध्याय पूर्ण हुआ ॥

सम्पूर्ण श्रावण मास पुराण कथा और माहात्म्य

<https://astrodisha.com/sampuran-complete-shravan-maas-mahatmya/>

पंडित सुनील वत्स

Website : <https://astrodisha.com>

Whatsapp No : +91- 7838813444

Contact No: +91-7838813 - 444 / 555 / 666 / 777

Facebook : <https://www.facebook.com/AstroDishaPtSunilVats>

YouTube Channel : <https://www.youtube.com/c/astrodisha>